होली का आध्यात्मिक रहस्य

होली का त्योहार शिवरात्रि के बाद, फाल्गुन पूर्णिमा के दिन आता है और लोग इसे प्रायः तीन प्रकार से मनाते हैं। वे प्रथम दिन होलिका जलाते हैं, एक दूसरे पर रंग डालते हैं और फिर मंगल मिलन मनाते हैं। होली के मनाने की तिथि और उपयुक्त तीन रीतियों पर ध्यान देने से होली के वास्तविक रहस्यों को सहज की समझा जा सकता है।

भारत में वर्ष फाल्गुन की पूर्णिमा को समाप्त होता है। इसलिए फाल्गुन की पूर्णमासी की रात्रि को होलिका जलाने का अर्थ पिछले वर्ष की कटु और तीखी स्मृतियों को जलाना, अपने दुःखों को भुलाना और हंसते- खेलते नये वर्ष का आह्वान करना है। पुराने वर्ष के अंत में इस न्यौहार का मनाया जाना इस रहस्य का भी परिचय देता है कि यह त्यौहार पहले कलियुग के अंत में मनाया गया था, जिसके बाद सतयुग के सुख शान्ति के दिन शुरू हुए थे। कलियुग के अंत में होलिका जलाने से मनुष्य का दुःख, दरिद्रता, वासना तथा व्यथा सब दूर हो गये। प्रश्न उठता है कि होलिका जलाने से मनुष्य के विकार और विकर्म तथा दुःख और क्लेश भला कैसे नाश हो सकते हैं?

इससे स्पष्ट है कि लकड़ियां तथा गोबर जलाना ही, होलिका दहन नहीं है। लकड़ियों और गोबर को तो आज भी भारत के देहातों में प्रतिदिन जलाया जाता है। परंतु यहां दुःख, दरिद्रता तथा अपवित्रता का प्रज्वलन तो हुआ नहीं है, बल्कि दिनों-दिन इनमें वृद्धि हो रही है। अतः विचार करने पर सभी वह मानेंगे कि योगाग्नी प्रज्वलित करने से ही हमारी पुरानी कटु स्मृतियां मिट जाती हैं, हमारे दुःख दूर हो सकते हैं और उल्लास आ सकता है। इसलिए होलिका के दिन गोबर और घास-फूस को अग्नि की ज्वाला में जलाना वास्तव में मन की उबड़-खाबड़ अथवा दूषित वृत्तियों को योगाग्नी द्वारा भस्मसात करने की प्रेरणा देता है। इसी कारण इस त्योहार को कई लोग राक्षस विनाशक त्यौहार भी मानते हैं, क्योंकि यह माया रूपी राक्षसी को ज्ञान रूपी हो- हल्ले से भगाने का त्योहार है।

होलिका के पर्व पर लोग गेंहू और जौं की बालों को भूनते हैं। योगियों की भाषा में ज्ञान और योग (तपस्या) की अग्नि से उपमा दी गयी है। जैसे भुना हुआ बीज नये फल की उत्पति नहीं कर सकता, वैसे ही ज्ञान योग युक्त अवस्था में किया गया कर्म-विकर्म का रूप नहीं ले सकता अर्थात वह विकारी मनुष्यों के संग में फल नहीं देता अतः होलिका शब्द भी हमें इस बात की स्मृति दिलाता है कि परमपिता परमात्मा ने कलियुगी पुरानी सृष्टि के अंत मनुष्यों को ज्ञान-योग रूपी अग्नि द्वारा कर्म रूपी बीज को भूनने की जो सम्मति दी थी, हम उस पर आचरण करें। योगाग्नि से अपने पुराने व दूषित संस्कारों को दग्ध करें और जो कर्म करें वा ज्ञान- योग युक्त होकर करें।

होलि का अर्थ हम दूसरे शब्दों में इस प्रकार भी कर सकते हैं- होली अर्थात बीती सो बीती, जो हुआ उसकी चिंता न करों और आगे के लिए श्रेष्ठ कर्म ज्ञान-योग युक्त होकर करो, होली अर्थात् होली हो गयी, मैं आत्मा अब ईश्वर- अर्पण होली अर्थात अब जो भी कार्य करता है वह परमात्मा के आदेश अथवा श्रीमत के अनुसार ही करना है, होली अंग्रेजी भाषा के होली शब्द का अर्थ हिंन्दी में पवित्र है, तो जो भी कर्म करना है किसी मनोविकार के वशीभूत होकर न हो अर्थात शुद्ध (पवित्र) हो। इस प्रकार से हम होली के त्योहार के एक शब्द से ही अनेक शिक्षायें ग्रहण कर सकते हैं।

होली पर रंग

होली के पावन पर्व पर एक दूसरे पर रंग डालने की प्रथा है। ज्ञान को रंग कहा जाता है। ज्ञानी मनुष्य का संग अर्थात संबंध संपर्क में रहने वाली आत्माओं को भी ज्ञान का रंग चढ़ाता है, उन्हें चोला धारण करने वाली चोली (आत्मा) को परमात्मा से संबंध जुड़वा कर उसकी लाली से लाल करता है अर्थात शक्ति लेने की विधि बताता है।

इस सृष्टि में दो ही रंग है- एक माया का रंग और दूसरा ईश्वर का रंग। इस रंगमंच पर हर एक मनुष्य इन दोनों में से एक न एक रंग में तो रंगता ही है। निःसंदेह, ईश्वरीय रंग में रंगना श्रेष्ठ होली मनाना है, क्योंकि इस रंग में रंगा हुआ मनुष्य ही योगी है। माया के रंग में रंगा हुआ मनुष्य तो भोगी है।

आजकल होली के दिन छोटे-बड़े सभी मिलकर एक-दूसरे के साथ होली खेलते हैं, यहां तक की जबरदस्ती भी रंग लगाते हैं। वास्तव में लगाना तो चाहिए ज्ञान का रंग, परंतु देह अभिमानी लोग भौतिकवाद के कारण आध्यात्मिकता को तिलंजलि देकर भौतिक रंग एक दूसरे को लगाकर इस निर्धन देश के करोडों रुपयों के रंग और कपड़े खराब कर देते हैं। ऐसी होली खेलने का क्या लाभ, जिसमें खेल ही खेल में अनेक लोगों का दिल दुःखता है।

स्थूल रंग वाली होली से तो अधिकतर लड़ाई ही होती है। छोटे बच्चे बड़ों की पगड़ी उतारते हैं और बड़े भी एक दूसरे पर कीचड़ उछालते हैं और एक दूसरे को गाली- गलौच भी देते हैं। अफसोस है कि होली के ऐसे पावन पर्व को लोगों ने कैसे हुल्लड़बाजी का पर्व बना दिया है।

होली संगम का त्योहार है

होली का त्योहार कलियुग के अंत और सतयुग के आदि के संगम समय की याद दिलाता है, क्योंकि तब परमपिता परमात्मा शिव ने अवतरित होकर ज्ञान होली खेली और आत्माओं ने उनके साथ मंगल मिलन मनाया। हिरण्यकश्यप को वरदान मिला हुआ था कि न दिन हो, न रात- यह संगम समय की ही याद दिलाता है, क्योंकि सतयुग और त्रेतायुग को ब्रह्मा का दिन और द्वापर तथा कलियुग को ब्रह्मा की रात्रि कहा जाता है एवं देशें के संगम को न दिन, न रात्रि कहा जा सकता है। अब वर्तमान समय परमपिता परमात्मा से प्रत्यक्ष ज्ञान की होली और मंगल मिलन मना रहे हैं, क्योंकि अब संगम युग है। परंतु इस रहस्य से अनभिज्ञ लोग स्थूल रंग की होली मनाकर समय, धन, वस्तु और शक्ति व्यर्थ ही गंवा रहे हैं।

होली को होली के रूप में मनाओ

अब भगवान के आज्ञानुसार आपसी शत्रुता, भेदभाव और द्वेष को मिटा देना चाहिए और आपस मे जो अनुचित बातें हो चुकी हैं, उन्हें होली समझकर होली मनानी चाहिए। ऐसी होली मनाने से ही यथार्थ मंगल मिलन होगा।

बीती ताहि बिसार दें, आगे की सुधि लेय, जो बन आवे सहज में ताही में चित देय,

इस शिक्षा पर चलकर और आत्मा की चोली ज्ञान से रंग कर परमात्मा से वास्तविक मंगल मिलन मनाना चाहिए।

ओम् शान्ति